शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपनिषदों में ॐ का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अमित कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
देव समाज कॉलेज फॉर वीमेन
फिरोजपुर, पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

भारत के केंद्र में आध्यात्मिकता समाहित है। प्रागैतिहासिक काल में ही मूर्तिपूजा के प्रमाण उपलब्ध होने लगते हैं। भगवान् शिव की पूजा का प्रथम प्रबल प्रमाण मोहनजोदड़ो में प्राप्त पाशुपति की मुहर से माना जाता है। हड़प्पा सभ्यता में शिवलिंग की आराधना के भी प्रमाण मिलते हैं। वैदिक संस्कृति को देव संस्कृति की विशेषता से अभिहित किया गया है। वेदों की रचना के केंद्र में देवोपासना है। ऋगवेद की ऋचाएं देव स्तुति हेतु ही रचित थीं। साकार देवताओं की अनेक कोटियाँ हैं और उनमे मूल हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश। वेद, उपनिषद, वेदांग, उपवेद, आरण्यक, ब्राह्मण और पुराण 'ओमकार' का गुणगान करते नहीं थकते। गीता में भगवान् कृष्ण कहते हैं'वेदों में मैं ओमकार हूँ'। गुरुनानक देव जी बीजमंत्र देते हैं'एक ओमकार सतनाम'। यह ओमकार रहस्यमय है, जिसके प्रसंगों व उपयोगिताओं से सभी हिन्दू ग्रन्थ आपूरित है। सभी धर्मों के मौलिक सिद्धांतों में भेद है लेकिन एक मात्र तत्व है ओमकार जिसके सन्दर्भ में सभी सहमत हैं। ॐ की बात रामायण, महाभारत, गीता, बाइबिल, ओल्ड टेस्टामेंट, जेंदावेस्ता, सूफी, जैन, बौद्ध आदि सभी करते हैं। संतों का सुमिरन सुरति ओमकार की तरफ ही इंगित है। आश्चर्य तो यह है की गौतम बुद्ध व भगवान् महावीर ने ईश्वर की सत्ता पर प्रश्न उठाए हैं लेकिन ओमकार पर दोनों एकमत हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में उपनिषदों में ओमकार तत्व की वैज्ञानिकता का विश्लेषण व विवेचन किया गया है।

मुख्य शब्द : *ॐ, ओमकार, अनाहत नाद, उपनिषद, मांडूक्य उपनिषद*

प्रस्तावना

गुरु ग्रन्थ साहिब में उन्ही संतों के 'सबदों' का संकलन गुरु अर्जन देव ने किया है जो ॐ की महिमा और सहजयोग की साधना पद्धति पर प्रकाश डालते हैं। इसमें हिन्दू, सिख, योगी, नाथ के अतिरिक्त मुस्लिम व सूफी संतों के भी पदों का संकलन हुआ है। ॐ एक साधना पद्धति है जो ज्ञान व भक्ति मार्ग दोनों को समाहित करती है। इस धारा की साधना पद्धति को सहजयोग कहा गया है। इसे विहंगम योग भी कहते हैं, क्योंकि साधारण व विशिष्ट सभी के लिए यह उपलब्ध है। इस शोधपत्र में ओमकार से सम्बंधित उन सूत्रों का विश्लेषण किया गया है जो सनातन भारतीय ब्राह्मण साहित्य में वर्णित हैं। ये सूत्र न सिर्फ ॐ की दिव्यता का गान करते हैं वरन इसकी साधना और सिद्धि की विशिष्टताओं पर भी अनुपम प्रकाश डालते हैं।

उपनिषदों में ॐ

वृहदारण्यक उपनिषद समस्त उपनिषदों में सर्वाधिक व्यापक है जिसकी रचना महर्षि याज्ञावल्क्य ने की थी। इसमें ॐ के सन्दर्भ में उल्लिखित है 'ॐ' ही ब्रह्म है, यही आदि है और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अंत भी, यही ब्रह्म का ज्ञाता वेद है, इसे जानकार योगी उसे जान जाता है जो भी जानने योग्य है।1 छान्दोग्य उपनिषद में ॐ की विशद महिमा है। इसमें उल्लिखित है ॐ पर ध्यान करो, यह अस्तित्व का सार है, यह सर्वोत्कृष्ट अनुभव है।2

ॐ में वाक् और प्राण का समन्वय है। जब ये दोनों साथ आते हैं तो परस्पर पूर्ण हो जाते हैं और साधक आप्तकाम हो जाता है। इस पर ध्यान करो और तृप्त हो जाओ।3 इसीलिए ॐ का उच्चारण श्वास के साथ किया जाता है और इसी कारण इसे प्रणव कहा जाता है। उपनिषद ॐ को पूर्णता प्रदान करने वाली शक्ति के रूप में निरूपित करते हैं। ॐ पर ध्यान करने से योगी को इच्छा रहित की उपलब्धि होती है।4

ॐ का उच्चारण, गायन, सम्मान और इसके ज्ञान के साथ इस पर ध्यान करने वाला सिद्धि सम्पन्न हो जाता है।5 ॐ पर ध्यान करने से जो शक्ति प्राप्त होती है वह व्यक्ति की समस्त अभिलाषाओं को सिद्ध कर देती है।6 आत्मज्ञान के इच्छुक साधक ओमकार के ज्ञान से आत्मज्ञान पा लेते हैं। ॐ अमरत्व का रहस्य है। छान्दोग्य उपनिषद में स्पष्ट निर्दिष्ट है कि ॐ की ध्वनि अभय प्रदान करती है, यह अमरत्व की दिशा में साधक को अग्रसर करती है। इसके रहस्य को जानने वाला साधक अमर हो जाता है।7 ॐ अमरत्व का रहस्य है।

उपनिषद के ऋषि सूर्य की महिमा गाते हैं। सूर्य जीवन का स्रोत है। सभी जीवन सूर्य से ही उद्भूत हुआ है। सूर्य ही वह द्वार है जिससे आत्मिक सत्ता भौतिक स्वरूप ग्रहण करती है। भौतिक सत्ताएं भी जब उच्चतर लोकों की तरफ अग्रसर होती हैं तो वे सूर्य द्वारा ही उन उच्चतर लोकों में प्रविष्ट होती हैं। विज्ञान ने सूर्य की सतह पर होने वाले ध्वनि को रिकार्ड किया तो पाया कि यह ॐ की ही ध्वनि है। इसे ही मनीषियों ने 'उद्गीत' की संज्ञा दी है। छान्दोग्य उपनिषद कहता है 'ॐ ही उद्गीत है', उद्गीत ही ॐ है, सूर्य निरंतर उद्गीत में निमग्न रहते हैं।8

मुख से उच्चरित ॐ को श्वास के साथ जोड़ कर जो ध्वनि निःसृत होती है उसे उद्गीत कहा गया है। ॐ हमारे स्थूल शरीर, मन और आत्मा का गीत है। यह समय और असमय को जोड़ने वाला तत्व है। ॐ के साथ जुड़ कर साधक अस्तित्व के स्पंदन से जुड़ जाता है और वही स्पंदन है हमारी चेतना का भी। उद्गीत ही प्रणव है, प्रणव ही उद्गीत है (यदि ज्ञान है तो), जिस प्रकार होता 9 के मुखारविंद से त्रुटिपूर्ण उच्चारण भी शुद्ध हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार ॐ के ज्ञानी के नकारात्मक कर्म उसे मुक्त ही करते हैं।10

उद्गीत या ॐ अस्तित्व का सार है, यह 'सत्व' है। यह सर्वोत्कृष्ट अनुभव है। इस पर ध्यान करने वाला वह सब प्राप्त करता है जो सर्वोत्कृष्ट है। शौनक ऋषि शांडिल्य से कहते हैं. जब तक तुम्हारा वंश इस उद्गीत को जानता रहेगा तब तक ही वह सर्वोत्कृष्ट रहेगा। वह न सिर्फ इस लोक में कीर्ति प्राप्त करेगा वरन तमाम उच्चतर लोकों में भी।11 ॐ लोक और परलोक को धन्य कर देता है।

जैसे सभी पत्तियां अपनी शाखाओं से जुडी रहती हैं उसी प्रकार सभी निधियां ॐ से संयुक्त हैं।12 ॐ जीवन के सभी आयामों में समाहित है। जिस प्रकार व्याधि व मृत्यु में वाणी लुप्त हो जाती है उसी प्रकार मरणोपरांत चेतना अपने मूल स्रोत से विमुख हो जाती है, वह भ्रमित हो जाती है लेकिन उनकी चेतना भ्रमित नहीं होती जो ॐ का उच्चारण करते हुए शरीर का त्याग करते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्राण के शरीर त्यागने के सन्दर्भ में उपनिषद कहते हैं. सूर्य और जगत का एक दिव्य सेतु से सम्बन्ध निर्मित हुआ है यह सेतु ॐ के नाद से निर्मित है। जब ॐ में निमज्जित चेतना शरीर का त्याग करती है तो वह इसी सेतु से उर्ध्वगमन को उपलब्ध होती है।13

कठोपनिषद आत्मज्ञान के लिए ॐ की महत्ता का प्रतिपादन करता है। प्रश्नकर्ता सत्य की प्राप्ति के लिए जब प्रश्न करता है तो उत्तर प्राप्त होता है वेद जिस एक लक्ष्य को इंगित करते हैं वह ॐ है।14 ॐ परमात्मा का सगुण व निर्गुण दोनों रूप है। ॐ के अनुभव से साधक सत्य को प्राप्त हो जाता है। ॐ के श्रवण के द्वारा चेतना उर्ध्वगमन को उपलब्ध हो जाती है।15 जो भी अस्तित्व रखता है या नहीं रखता है वह ॐ है। मांडूक्य उपनिषद के अनुसार स्वयं में प्रवेश के लिए ॐ ही उपाय है,16 यदि ब्रह्म का संधान करना है तो ॐ का मनन वह तीर है जिससे यह संधान संभव है।17

प्रश्न उपनिषद में एक कथा आती है। सत्यकाम ने अपने गुरु ऋषि पिप्पलाद से जिज्ञासा की ॐ पर ध्यान करने के क्या-क्या परिणाम हैं ? पिप्पलाद ने उत्तर दिया ॐ के अनंत आयाम हैं। निम्न से उच्च आयाम में गति करने हेतु ॐ एक सूत्र है, यह अमोघ है। ॐ का श्रावक और मुनि स्वतः ही निम्नतर आयाम से उच्चतर आयाम में पहुँच जाता है।18 श्वेताश्वतर उपनिषद के अनुसार ॐ ही अंतिम ब्रह्म है।19 ॐ की साधना माया के उस बीज को दग्ध कर देती है जो जन्म-मरण का कारण है।20

निष्कर्ष

ओमकार के सुमिरन की महत्ता का वर्णन हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सूफी, सिख, योग, तंत्र आदि समस्त आध्यात्मिक धाराएं एक स्वर से करती हैं। यह एक वैज्ञानिक पद्धति है जो सद्गुरु की कृपा और मार्गदर्शन से ही फलित होती है। ॐ की साधना में गुरु प्रसाद यानी गुरु कृपा का विशेष महत्व है। गुरु नानक देव जी ने जपुजी साहब में गुरु कृपा को ओमकार रूपी साधना की सिद्धि का प्रमुख आधार बताया है। हिन्दू धर्म भी इसकी महिमा और विकसित साधना पद्धिति से पूर्ण है। इसकी महत्ता का गान लगभग सभी ब्राह्मण ग्रंथों ने मुक्त कंठ से किया है। इनमें न सिर्फ महिमामंडन है बल्कि विकसित साधना का मार्ग भी उपलब्ध है जिसका एक समर्थ गुरु के मार्गदर्शन में शिष्य पालन करते हुए जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 वृहदारण्यक उपनिषद 5.1.1
2 छान्दोग्य उपनिषद, 1.1.1
3 छान्दोग्य उपनिषद, 1.1.6.7
4 छान्दोग्य उपनिषद, 1.1.8
5 छान्दोग्य उपनिषद 1.1.9,10
6 छान्दोग्य उपनिषद 1.2,14
7 छान्दोग्य उपनिषद 1.4.4,5
8 छान्दोग्य उपनिषद 1.5.1
9 ऋगवेद के ऋचाओं के प्रामाणिक ज्ञाता और प्रमुख विद्वान को 'होता' कहा जाता है.
10 छान्दोग्य उपनिषद 1.5.5
11 छान्दोग्य उपनिषद 1.9,2-4
12 छान्दोग्य उपनिषद 2.23.3
13 वही, 8.6.2,5
14 कठोपनिषद 1.2.15
15 वही, 1.2.17
16 माण्डुक्य उपनिषद 8, 12
17 वही, 2.2.3
18 प्रश्न उपनिषद 5:1,2,5,7
19 श्वेताश्वतर उपनिषद 1:7
20 वही 2:8